237. 6 (*on* ii. 3. 45); तथा प्रभास्थानीयतदंशाज्जीवादंशी परोऽप्यर्थान्तरभूत इत्यर्थः VedāntTaSā. 60. 8.

अंशिभाव (aṁśi–bhāva) *m.* the nature of being the whole अंशिभावेऽप्यत्यन्ताभेदो नास्तीति चेत्, कोऽयं विशेषः IṣṭaSi. 268. 16.

अंशिभूत (aṁśi–bhūta) *adj.* [*f.* *–ā*] being the whole or entire thing यथा वृक्षत्वं स्कन्धप्रकाण्डशाखाद्यनेकांशानामंशिभूतैकद्रव्यवृत्ति S'rutaPra. ii. 176. 6 (*on* i. 4. 28); पृथिव्याः पञ्चाशत्कोटिविस्तीर्णाया अभिमानिन्यंशिभूता धरादेवी NyāySu.(Ja.) 453B. 7 (*on* ii. 3. 18)

अंशिरूप (aṁśi–rūpa) *n.* the form or status of the whole अत्रांशिरूपेणैकोंऽशकलारूपेण तु बहुत्वेत्यर्थः प्रतीयते GoviBh. 166. 7 (*on* ii. 3. 44)

अंशिविशेष (aṁśi–viśeṣa) *m.* a particular whole, a given complete entity न ह्यनेनांशिविशेषेण विनांशविधेरनुपपत्तिः CaturCin. iii (2). 346. 7.

अंशिसंयोग (aṁśi–saṁyoga) *m.* conjunction with the whole entity सर्वेऽप्यंशिसंयोगास्तत्तदंशवृत्तयः NyāySu.(Ja.) 365B. 11 (*on* ii. 2. 6); 367A. 6 (*on* ii. 2. 6)

अंशिसंस्तुति (aṁśi–saṁstuti) *f.* praise of the whole entity नानागुणविधौ तस्मादंशद्वारांशिसंस्तुतिः NyāyMāVi. 53. 15 (*on* i. 4. 12)

अंशिसाधर्म्य (aṁśi–sādharmya) *n.* similarity with the whole entity अंशेष्वंशिसाधर्म्यस्याव्यभिचारात् NyāySu.(Ja.) 504A. 5 (*on* iii. 2. 9)

अंशीकृ (aṁśī–kṛ–) VIII. U. **A** to divide, to share अंशीकृत्य स एव संयुगशतै राज्ञां गणैर्भुज्यते S'atTrayī. 2. 304; **B** to treat as a numerator of a fraction अंशीकृत्य च्छेदं प्रमाणराशेः GaṇiSāSaṁ. 2. 8.

अंशीभूत (aṁśī–bhūta) *adj.* which has become a part नाप्यंशीभूतसोमयागविकृतित्वमंशांशिनोरभेदेन प्रकृतिविकारभावासंभवादित्यर्थः MayūMāli. 224. 35 (*on* iii. 2. 27)

अंशु (aṁśú) *m* [occasionally *f.* according to Vaija. 291. 25 and according to 'some' when it means *dyuti* or *raśmi*, NānārthāSaṁ. i. 48. 58; Debr. p. 474 'cannot be traced to a root' / from *aś–* and *śaṁ* or *an–* and *śaṁ* शमष्टमात्रो भवति, अननाय शं भवतीति वा Nir. 2. 5; from *aś–* Uṇā. (He.) 719; oxyt. अंशुशब्दः प्रातिपदिकस्वरेणान्तोदात्तः PadMañ. *on* KāśiVṛ *on* P. iv. 3. 166 or अंशुशब्दः 'कुश्च' इति वर्तमाने 'मृगखादयश्च' इति निपातितः PadMañ. *on* KāśiVṛ. *on* P. vi. 2. 193] **1 A** a Soma stalk (or juice extracted from it) **B** a filament or part of the Soma stalk **C** name of a cup in which Soma is poured **D** a shoot or sprout–like decoration **E** any exudation or a Yāga **2** a ray **A** of the sun **B** of the moon **C** a ray in general **3** the sun **4** the moon **5 A** cobweb **B** a fibre of a thread **C** fibre of a bark **6** Proper name **A** of a ṛṣi **B** of a Vedic teacher **C** of S'iva **D** of one of the twelve Ādityas **E** one of the deities called Harita **F** a companion of Kṛṣṇa **G** a door–keeper of Kṛṣṇa **H** a prince (i) son of Purumitra (ii) son of Priyagotra (iii) son of Purutvat **7** rein **8** a small portion **9** bristle **10** Kośas *add* light, serpent, dress, straight, fire, foot, point, weapon, white, etc. [DBHS cloth, garment] **1 A** a Soma stalk (or juice extracted from it) आ प्यायस्व मदिन्तम सोम विश्वेभिरंशुभिः ṚV. i. 91. 17 = VājaS. 12. 114; ṚV. ix. 67. 28; अध्वर्यवोऽरुणं दुग्धमंशुं जुहोतन वृषभाय क्षितीनाम् ṚV. vii.. 98. 1; iii. 36. 6; v. 36. 1; तां वां धेनुं न वासरीमंशुं दुहन्त्यद्रिभिः सोमं दुहन्त्यद्रिभिः ṚV. i. 137. 3; ix. 72. 6; अंशोः पीयूषं ṚV. ii. 13. 1; iii. 48. 2; x. 94. 8; vi. 17. 11; vi. 20. 6; i. 125. 3; viii. 72. 2; अंशुर्यवेन पिपिशे ṚV. ix. 68. 4; अंशोः पयसा ṚV. ix. 107. 12; समुद्रादूर्मिर्मधुमाँ उदारदुपांशुना सममृतत्वमानट् ṚV. iv. 58. 1; VājaS. 17. 89; यं देवा अंशुमाप्याययन्ति यमक्षितमक्षिता भक्षयन्ति AV. vii. 81. 6; v. 29. 12 v. 29. 13; ब्रह्मणा शुद्धा उत पूता घृतेन सोमस्यांशवस्तण्डुला यज्ञिया इमे AV. xi. 1. 18; ये व्रीहयो यवा निरुप्यन्तेंऽशव एव ते AV. ix. 6. 14; अस्माकमंशुं मघवन्पुरुस्पृहं वसव्ये अधि बर्हय SV. I. iv. (i). 1. 6; I. iv (i). 2. 3; अꣳशुरꣳशुस्ते देव सोमाप्यायताम् TaiS. I. ii. 11. 1; VājaS. 5. 7; अꣳशुना ते अꣳशुः पृच्यतां परुषा परुः…TaiS. I. ii. 6. 1 (Sāy. अंशुः सूक्ष्मोऽवयवः) VājaS. 20. 27 (Mahī. अंशुः भागः); घ्नन्ति वा एतत्सोमं यदभिषुण्वन्त्यꣳशून् TaiS. VI. iv. 4. 4; वाचस्पतये पवस्व वाजिन् वृषा वृष्णो अꣳशुभ्यां गभस्तिपूतः TaiS. I. iv. 2. 1; VājaS. 7. 1; गायत्री यं सोममाहरत्। तस्य योऽꣳशुः परापतत् TaiBr. I. iv. 7. 5; स देवानꣳशूनकरोत् TaiBr. I. iv. 1. 1; प्रत्नोंऽशुर्यमेतमभिषुण्वन्ति KauṣīBr. 13. 4; तस्मादाहुस्सोमस्यैवांशुराप्यायस्वेति JaimiBr. 1. 224; 1. 114; मर्कटोंऽशूनादाय वृक्षमापुप्रुवे ṢaḍviBr. i. 6. 9; संतृप्तस्य राज्ञः प्रतिप्रस्थाता सव्ये पाणौ षडंशून् सचते BaudhS'S. i. 206. 9; होतृचमसीयानंशूनुत्तमे पर्यायेऽभिषुणोति ĀpaS'S. xii. 10. 11; अङ्गुष्ठेन कनिष्ठिकया चाङ्गुल्यांशून् संगृह्य ĀpaS'S. x. 24. 8; x. 24. 14; xii. 8. 4; etc. एकैकेन पर्यायेण द्वौद्वावंशू प्रवृहति MānS'S. VII. i. 1. 21; अंशून् बभस्ति KāśiVṛ. *on* P. vi. 4. 100; अपि च तृतीये सवनेंऽशुरेकोऽभिषूयते S'ābaBh. 875. 2 (*on* iii. 3. 31); अवशिष्टानामप्यंशूनामुपसमूहनवचनात् S'āstrDī. 255. 7 (*on* iii 3. 11); **1 B** a filament or a part of the Soma stalk (usually occurs with *skand–*) यस्ते द्रप्सः स्कन्दति यस्ते अंशुर्बाहुच्युतो धिषणाया उपस्थात् ṚV. x. 17. 12; यस्ते द्रप्सः स्कन्नो यस्ते अंशुरवश्च यः परः स्रुचा ṚV. x. 17. 13; यो वै सोमस्याभिषूयमाणस्य प्रथमोऽꣳशुः स्कन्दति TaiS. III. i. 8. 3 यो द्रप्सो अꣳशुः पतितः पृथिव्यां…TaiS. III. i. 10. 1; VājaS. 7. 26; या एवास्याभिषूयमाणस्य विप्रुषः स्कन्दत्यंशुर्वा GopBr. ii. 2. 12; अथोपसृष्टं राजानमष्टौ कृत्वोऽग्रे अभिषुणोति सोंऽशौ स्कन्ने वाचयति BaudhS'S. i. 206. 11; ii. 173. 7 आ मा स्कानिति प्रथमप्लुतमंशुमभिमन्त्रयते ĀpaS'S. xii. 7. 11 MānS'S. II. iii. 4. 10; II. iv. 3. 29; **1 C** name of a cup (*graha*) having four corners in which Soma is poured for offering or the Soma offering contained in this cup परा वा एतस्यायुः प्राण एति योऽꣳशुं गृह्णाति TaiS. III. iii. 4. 3 (Sāy. यो यजमानोंऽशुनामकं सोमरसं पात्रे गृह्णाति); स एतं प्रजापतिरꣳशुमपश्यत् तमगृह्णीत तेन वै स आर्ध्नोत् TaiS. VI. vi. 10. 1; VājaS. 18. 19; अंशुर्वै नाम ग्रहः S'atBr. IV. i. 1. 2 (Sāy. गृह्यतेऽनेनेति करणव्युत्पत्त्या 'ग्रहः' दारुमयं पात्रमंशुनामकम्); प्रजापतिर्वा एष यदंशुः ।…तस्माद्वा अंशुं गृह्णाति S'atBr. IV. vi. 1. 1–2; I. v. 9. 1; V. i. 2. 1; अथ मनो ह वा अंशुः । वागदाभ्यः S'atBr. XI. v. 9. 2; अथातोंऽश्वदाभ्ययोरेव ग्रहणमंश्वदाभ्यौ ग्रहीष्यन्नुपकल्पयते द्वे औदुम्बरे नवे पात्रे तयोश्चतुःस्रक्त्यंशुपात्रं भवति श्लक्ष्णमदाभ्यपात्रम् BaudhS'S. ii. 173. 4; भ्रातृव्यवतादाभ्यो ग्रहीतव्यः बुभूषतांशुः ĀpaS'S. xii. 8. 12; xii. 7. 17; MānS'S. IX. iii. 1. 6; अंशुरिति मुक्तसंशयमेव ग्रहनामधेयम् S'ābaBh. 609. 10 (*on* ii. 3. 20); 1055. 5 (*on* iii. 6. 32); तृतीयसवनेंऽशुरेको गृह्यते TantrVā. 895. 18 (*on* iii. 3. 29); 1104. 10 (*on* iii. 6. 33); NyāyMāVi. 186. 20 (*on* iii. 6. 12); MīmāKau. ii. 60. 20 (*on* ii. 3. 20); BhāṭṭDī. ii. 194. 12 (*on* v. 3. 6); **1 D** a shoot or sprout–like decoration (of a horse) एष रुक्मिभिरीयते वाजी शुभ्रेभिरंशुभिः ṚV. ix. 15. 5 रोहिच्छ्यावा सुमदंशुः ṚV. i. 100. 16. (Sāy. सुमदंशुः स्वतः प्रांशुः । उक्तं च यास्केन सुमत् स्वयमित्यर्थः (Nir. 6. 22)); **1 E** any exudation or juice (not necessarily of Soma plant) or a name of a sacrifice (two possible meanings considered in the Mīmāṁsā literature) अंशुसंज्ञकं यागं करोतीत्येवं प्राप्तम् S'ābaBh. 609. 6 (*on* ii. 3. 20); अदाभ्यशब्देनावयवव्युत्पत्त्या हिंसाख्यदम्भानर्हद्रव्यस्य, अंशुशब्देन च निर्यासस्योपादानोपपत्तेः NyāySu.(So.) 943. 29 (*on* ii. 3. 20); अंश्वदाभ्यनामको वा (यागः) MīmāKau. ii. 61. 10 (*on* ii. 3. 20); **2 A** a ray of the sun तेषामादत्त तेजांसि जलं सूर्य इवांशुभिः MahāBhā. vi. 105. 31; (जघान) शरजालैरविच्छिन्नैस्तमः सूर्य इवांशुभिः MahāBhā. vii. 17. 24; viii. 64. 6; गुणैर्विरुरुचे रामो दीप्तः सूर्य इवांशुभिः Rāmā. ii. 1. 27; ii. 39. 8; ii. 57. 11; आयूंषि क्षपयन्त्याशु ग्रीष्मे जलमिवांशवः Rāmā. ii. 98. 19; दिवा सूर्यांशुसंतप्तम् CaraS. i. 6. 45; (1922 Ed.); पन्थानश्च विशुध्यन्ति सोमसूर्यांशुमारुतैः YājñaSm. 1. 194; ViṣṇuP. ii. 9. 9; मण्डलादंशुमिवांशुभर्तुः Kirātā. 15. 49; अंशुभिः प्रतप्तमभ्यर्णतया विवस्वतः S'iśuVa. 12. 66; सविता संहरत्यंशून् कषायानिव संयतः PadmP. (Ra) 73. 125; RāmC. 4. 66; 14. 61; Kapphiṇā. 11. 11; BṛParāSm. 2. 79; (रविः) कुर्वन् ककुभि ककुभि बन्धूकमयीमिव सृष्टिमंशुभिः YaśasCam. i. 364. 4; VāmaP. 15. 47; VarāP. 125. 43; PadmP. iv. 13. 26; BhaviP. III. iv. 3. 8 (544B. 27); हीरकस्य सूर्यांशुस्पर्शमात्रेण वमतो दीप्तिमच्छिशाः(? खाः) YuktiKa. 43. 11; RāmāMañ. 268. 11; अंशुभिः खरतरैरदर्शयत्तापमप्यधिकमुष्णदीधितिः VikraDeC. 14. 28; महदर्णो वेगात्स्पृष्टं वांशुभिरंशोरिह शुद्ध्येत् ĪśānS'iPa. i. 7. 35; ii. 9. 27; चन्द्रं मर्मरयन्ति पर्पटमिव क्रूरा रवेरंशवः SubhāRaK. 9. 24; Vāgbhaṭā. 2. 14; यस्यांशवः सकलकैरववैरकाराः S'rīKaC. 5. 43; TriṣaS'aPuC. i. 5. 560; RāghPāṇ.(Ka.) 4. 26; 12. 39; PṛthvīVi. 2. 1; KāvyKaVṛ. 4. 12 (1. 1); HaṁsSaṁ. 48; चरमभूमिधराग्रिमचूलिकामहिमरश्मिरभूषयदंशुभिः HammīMaKā. 7. 1; RasGaṅ 170. 7; PadyaVe. 358; GoviBh. 164. 3 (*on* ii. 3. 41); बिभ्राणा वामनत्वं प्रथममथ तथैवांशवः प्रांशवो वः…कृच्छ्राणि…हारिदश्वा हरन्तु SūryS'. 7; **2 B** of the moon भयात्तु तावेव रथौ समाश्रयंस्तमोनुदौ खे प्रसृता इवांशवः MahāBhā. viii. 64. 6; चन्द्रसूर्यांशुरहितं खं बभूवातिनिष्प्रभम् HariVaṁ. 61. 16; शारदस्याभिरामस्य चन्द्रस्येव नभोंऽशुभिः Rāmā. i. 15. 23; CaraS. i. 6. 29; i. 6. 45 (1922 Ed.); YājñaSm. 1. 194; नोच्छ्वसिति तपनकिरणैश्चन्द्रस्येवांशुभिः कुमुदम् Vikramo. 3. 16; चलत्पलाशान्तरगोचरास्तरोस्तुषारमूर्तेरिव नक्तमंशवः S'iśuVa. 1. 21; (शशभृतः) मधुपायिनामदलयन् दलयन्त्रणमंशवः HarVi. 3. 67; RāmC. 2. 79; VarāP. 11. 55; इन्दोः कुमुद्वतीं चक्रुः प्रेमदूता इवांशवः RāmāMañ. 235. 26; 311. 7; BṛKathāS'loSaṁ. 27. 27; VyaktiVi. 70. 11; S'rīKaC. 11. 57; शीतद्युतेरंशवः । प्राप्ताः संप्रति पश्चिमस्य जलधेस्तीरं PrasaRā. 7. 81; SaduktiKa. 10. 9; NemiDū. 73; प्रतिदिशममृतांशोरंशवः संचरन्ति SāhiDa. 561. 5; Subhāṣi. 1123; 2194; पूर्णोऽपि रजनीनाथो रिक्त एवांशुभिर्विना CaitaCa. 199. 2(8); RasGaṅ 409. 10; BhāmiVi. (App. 11. 21); कोऽयं संप्रति य(? या)मुनीयसलिलं संकाशयत्यंशुभिः GopāKeCan. 122. 19; गुणैराप्यायते सोमश्चांशुभिः पूरयञ्जगत् Hastyāyur.